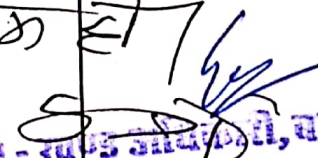


6 ³
2020

पुस्तकालय में दुरुस्त करके पाठ्य-पुस्तक
गोविंदको स्वतंत्र रूप से करके
कृपावीर सिंह जी द्वारा स्वतंत्र रूप से
ने दुरुस्त की कि पाठ्य-पुस्तक
में पुराने प्रकार का इसी व्याख्यान
द्वारा निर्मित किया जाना है। जिससे
पुनः इस व्याख्यान द्वारा किसी
प्रकार की कार्यवाही की जाना विधि
संभलत नहीं है। करके पाठ्य-पुस्तक
गोविंद स्वतंत्र रूप से करना है कि
उसके पाठ्य-पुस्तक में वह लक्ष्य नहीं
किया। जिससे इनके द्वारा उस दुरुस्त
का प्रश्न पूरा किया गया है। पुस्तकालय व
उपलब्ध वेब के अनुसार व उक्त

पत्र व्यवहार को सुनने के ~~प्रकार~~
 प्रकार में जाहिर है कि इसी द्वारा ~~प्रकार~~
 प्रकृत प्रकार सं. 148/96 कर चुका गया ~~प्रकार~~
 कठगत धारा 136 उप भाग 1 इनके
 30-2003 को खारिज किया जा
 चुका है। इस प्रकार इसी द्वारा ~~प्रकार~~
 द्वारा पुनः निर्मित प्रकार के ~~प्रकार~~
 में पुनः इसी द्वारा किसी
 प्रकार की कार्यवाही उपरोक्त नसी
 होने से प्राप्त गयी कठगत
 धारा 136 उप भाग 1 खारिज
 किया जाता है। केवल केवल
 सुमार लेकर नंबर को का हो


 34 - 1015 जयपुरी, गरी